जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वैराग्यवर्धक बारह भावनायें मुक्तिपथ का पाथेय तो हैं ही; लौकिक जीवन में भी अत्यन्त उपयोगी हैं।

वर्ष : 24 | फरवरी (प्रथम) 2002 | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अंक : 19 | सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

तीन लोक महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर में सीमन्धर जिनालय के तत्त्वावधान में हुये श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रथम वर्षगाँठ के पावन अवसर पर दिनांक 13 जनवरी से 17 जनवरी 2002 तक श्री तीन लोक महामंडल विधान सामूहिक रथयात्रा एवं शोभायात्रा के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रात: प्रतिदिन द्रव्यदृष्टि एवं रात्रि में निश्चय-व्यवहार नय विषय पर सारगर्भित प्रभावी प्रवचन हुये। रात्रि में भारिल्लजी के प्रवचन के पूर्व ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री के समयसार पर प्रवचन हुये, साथ ही डॉ. योगेशजी शास्त्री एटा, पण्डित कैलाशचन्दजी 'अचल', पण्डित भानुकुमारजी शास्त्री, पण्डित ज्ञानचन्दजी मदन, डॉ. कमलश्री नायक, पण्डित जयकुमारजी जैन, पण्डित चम्पालालजी पटवारी का व्याख्यान माला एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मलाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री 'धवल' भोपाल द्वारा संगीत के माध्यम से प्रभावपूर्ण ढंग से कराये गये। विधानकर्ता श्री शिखरचन्दजी अंकितकुमारजी मोदी अनौरावाले थे।

इस अवसर पर सीमंधर जिनालय में 24 चरणवेदिका पर ध्वजा एवं शिखर के ध्वजदंड पर भी ध्वजा चढ़ाई गई, जिसका सौभाग्य श्री चम्पालालजी पटवारी के परिवार को प्राप्त हुआ। सायंकाल 6.30 से 7.30 बजे तक उज्जैन से पधारे पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी द्वारा बालकक्षा ली गई। तत्पश्चात् जिनेन्द्र भक्ति होती थी। रात्रि में श्री सुरेन्द्रजी एवं मदनजी के नेतृत्व में कौन बनेगा ज्ञानश्रेष्ठी आदि अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री मुन्नालालजी एडवोकेट सैदपुरवाले, श्री अभयकुमारजी टडैया, डॉ. कमलश्री नायक, श्री सुरेशचन्दजी एडवेकेट तथा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के कार्यकर्ताओं के सहयोग से सानन्द सम्पन्न हुये। इस अवसर पर लगभग 5 हजार रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

- अनुराग जैन

मुमुक्षु समन्वय समिति का गठन

मुमुक्षु समाज के प्रमुख लोगों की एक मीटिंग देवलाली (महाराष्ट्र) में दिनांक 31 दिसम्बर 2001को आयोजित की गई। जिसमें मुमुक्षु समाज की एकता तथा समस्त दिगम्बर जैनसमाज के साथ समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से एक समिति का गठन किया गया। इस समिति का मूल उद्देश्य मुमुक्षु समाज में एकता कायम रखना तो है ही; साथ ही समस्त दिगम्बर समाज से समन्वय स्थापित करना भी है, जिससे जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में आज जो बाधायें आ रही हैं; वे समाप्त होंगी।

यह समिति मुमुक्षु समाज का प्रतिनिधित्व करेगी और मुमुक्षु समाज के हित में जो कुछ भी उचित होगा, संभव होगा; वह करेगी। 21 सदस्यीय इस समिति के 18 सदस्य निम्नानुसार हैं और 3 सदस्यों को सहवरण करने का अधिकार उक्त 18 व्यक्तियों को है। सदस्यों के नाम इसप्रकार हैं -

1. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर 2. श्री बसंतभाई एम. दोशी, मुम्बई 3. श्री हरखचन्दजी बिलाला, अकोला 4. श्री पवनकुमारजी जैन, अलीगढ़ 5. श्री अमृतलाल सी. महेता, फतेपुर 6. श्री मुकुन्दभाई खारा, देवलाली 7. श्री कांतीभाई मोटानी, मुम्बई 8. श्री आदीशकुमारजी जैन, दिल्ली 9. ब्र. पं. जतीशभाई जैन, सनावद 10. श्री देवेन्द्रकुमारजी बड़कुल, भोपाल 11. ब्र.पं. यशपालजी जैन, बेलगाम-कर्नाटक 12. श्री विमलचन्दजी झांझरी, उज्जैन 13. डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी 14. श्री अनंतभाई ए. शेठ, मुम्बई 15. श्री पूनमचन्दजी सेठी, दिल्ली 16. श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, बोरीवली -मुम्बई 17. भीमजीभाई शेठ, थाणा/लन्दन 18. श्री अभिनन्दनप्रसादजी जैन, सहारनपुर।

उक्त समिति की कार्यकारिणी 5 सदस्यों की रहेगी; जिनमें अभी डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, श्री बसंतभाई एम. दोशी और पं. हरखचन्द बिलाला का चयन हुआ है। शेष दो सदस्यों का चयन उक्त तीन व्यक्ति करेंगे।

पत्र-व्यवहार का पता - श्री दिग. जैन मुमुक्षु समन्वय समिति
173/175, मुम्बादेवी रोड, मुम्बई - 400002,
फोन - 3446099/3425241

बाल संस्कार शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

सेमारी (उदयपुर) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग बाल शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री रायपुर, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर एवं पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री खरगापुर का प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मलाभ प्राप्त हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति होती थी। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में श्री टेकचन्दजी एवं श्री कुन्दनलालजी का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(93 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

जब आत्मा का अनुभव होता है, तब कृतक औपाधिक उछाला क्रम-क्रम से विराम होते जाते हैं। इस निरंजन निज परमात्मतत्त्व के आश्रयरूप मार्ग से ही सभी मुमुक्षुओं ने भूतकाल में पंचम गति को पाया है, वर्तमान काल में पा रहे हैं और भविष्य काल में भी पायेंगे। यह परमात्मतत्त्व सभी तत्त्वों में सार है, त्रिकाल निरावरण, नित्यानन्द एकस्वरूप है। स्वभावभूत अनन्तचतुष्टय का स्वामी है, सुखसागर का पूर है, क्लेशसमुद्र का किनारा है, चारित्र का मूल है, मुक्ति का कारण है। सर्व भूमिका के साधकों को वही एक उपादेय है। हे भव्य जीवों! इस परमात्मतत्त्व का आश्रय करके शुद्धरत्नत्रय प्रगट करो। इतना नहीं कर सको तो सम्यग्दर्शन तो अवश्य करो ही। यह दशा भी अभूतपूर्व और अलौकिक है।

अब कहते हैं कि अभेदभक्ति मुक्ति का कारण है और भेदभक्ति बंध की कारण है। यह बात भव्य सज्जन पुरूष तो उल्लास से स्वीकार करते हैं; परन्तु जिसकी होनहार खराब है - ऐसा अभव्य जीव उसे नहीं स्वीकारता है।

श्री ऋषभदेव भगवान के पुत्र श्री भरत चक्रवर्ती एक बार उपवास करके बैठे थे और रानियों के साथ तत्त्वचर्चा कर रहे थे, तब रानी पूछती है कि हे स्वामी ! संसार में दु:ख है और अविनाशी सिद्धपद में सुख है तो उस सुख का उपाय क्या है? ऐसा प्रश्न पूछने में रानी को इतना तो ख्याल ही है कि आत्मा के अलावा शरीरादि में कहीं भी सुख नहीं है और उसे ऐसे अविनाशी सुख प्राप्त करने की रुचि हो गई है; अत: ऐसा प्रश्न करती है। यहाँ पति-पत्नी के प्रेम की बात नहीं है, परन्तु धर्मात्मा के प्रेम की बात है।

भरतजी जवाब देते हैं कि आत्मा में से आवरण का नाश होने से वह सुख प्रगट होता है। आत्मा में जो राग-द्वेष-मोह रूप भाव - आवरण है, उसका नाश करने पर सिद्धसुख प्रगट होता है। तब रानी पूछती है कि स्वामी ! इस आवरण के नाश करने का क्या उपाय है? वह भी हमें बताओ।

भरतजी जवाब देते हैं कि परमात्मा की भक्ति से आवरण का क्षय होता है। परमात्मा की भक्ति दो प्रकार की होती है। एक भेदभक्ति और दूसरी अभेदभक्ति। उसमें अभेदभक्ति आवरण के नाश का मूलकारण है। राग-द्वेष रहित पूर्ण ज्ञानस्वरूप परमात्मा का स्वरूप जानकर उसमें भक्ति- बहुमान करना भेदभक्ति है और अपने आत्मा को परिपूर्ण निर्मल परमात्मस्वरूप जानकर उसकी श्रद्धा-ज्ञान करके उसमें लीन होना अभेदभक्ति है। अभेदभक्ति निश्चयभक्ति है, परमार्थभक्ति है, वह वास्तविक भक्ति है, वह अपने आत्मा की भक्ति है।

पहले तो भेदभक्ति होती है अर्थात् परमात्मा के स्वरूप का विचार करना तो भेदभक्ति है - ऐसी भेदभक्ति को जानने के पश्चात् 'ऐसा ही परमात्मा मैं हूँ, आत्मा में ही परमात्मा होने की ताकत है - इसप्रकार अपने आत्मा को पहिचानकर ठहरे तो उसका नाम परमार्थ भक्ति है अथवा अभेदभक्ति है । अभेद आत्मा की ओर झुकने के लक्षपूर्वक भेदभक्ति हो तो उसे व्यवहार कहा जाता है।

विकार और आवरण का नाश करने के लिये आत्मा में अभेदभक्तिपूर्वक आराधना ही जरूरी है। अभेदभक्ति से ही सिद्धपद प्राप्त होता है।

देखो ! गृहस्थाश्रम में भी धर्मात्माओं के बीच में ऐसी तत्त्वचर्चा चलती है। स्त्री है; फिर भी तत्त्व की चर्चा करती है। 'मैं स्त्री हूँ, अत: मुझे नहीं समझना है'ह्न ऐसी मान्यता नहीं है। पत्नी अपने पति से ऐसे धर्म प्रश्न पूछती है। उसे तो सदैव ऐसा भान है कि मैं स्त्री नहीं हूँ; बल्कि मैं तो भगवान हूँ।

तथा दूसरी रानी पूछती है कि स्वामी ! परमात्मा की भेदभक्ति का तो हमें अभ्यास है; परन्तु अंतर में परमात्मा की अभेदभक्ति में चित्त नहीं लगता है। व्यवहार का अभ्यास है; परन्तु अंतर में आत्मा ज्ञान-दर्शन का सागर है, उसकी श्रद्धा-ज्ञान में चित्त लगता नहीं है तो आत्मा की अभेदभक्ति कैसे होगी? उसका उपाय कहो।

भरतजी उसका उत्तर देते हैं कि जिसप्रकार तुम वीतरागी चैतन्यमूर्ति भगवान के प्रतिबिंब को सामने रखकर उसकी भक्ति करती हो; उसीप्रकार आत्मा को भी तनुवातवलय में विराजमान सिद्धसमान चिंतोगी तो अभेद आत्मा की भक्ति में चित्त लगेगा । वातवलय में जिसप्रकार सिद्धप्रभु विराजते हैं; उसीप्रकार यह आत्मा शरीरप्रमाण विराजता है। भरत और उसकी रानियों को राग है और गृहस्थपना भी है; परन्तु अन्तर में रटन तो यही है अर्थात् धर्मप्रेमपूर्वक अध्यात्म की चर्चा करते हैं।

आत्मा की भक्ति से मुक्ति होती है, उस भक्ति का वर्णन चलता है। शरीर में रहने पर भी आत्मा शरीर से भिन्न है। यह बात समझले तो शरीरादि पर द्रव्य में एकत्व बुद्धि छूटे और आत्मा का श्रद्धान-ज्ञान हो। यह अभेद-भक्ति है। भेद-भक्ति का वर्णन थोड़ा कर दिया है। अब अभेद-भक्ति का विशेष वर्णन करते हैं। भेद-भक्ति को तो जगत जानता है; परन्तु आत्मा की अभेद-भक्ति को नहीं जानता है। धर्म आत्मा से करना है; अत: आत्मा कैसा है, यह जाने बिना धर्म नहीं होता है।

आत्मा ज्ञानमूर्ति सिद्ध जैसा है, शरीर से जुदा पुरुषाकार और चिन्मय है अर्थात् ज्ञानमय है। ऐसे आत्मा को जानकर उसमें ठहरना अभेदभक्ति है।

जिनबिम्ब इत्यादि की भक्ति तो भेदभक्ति है, उसमें शुभराग है और आत्मा को जैसा ऊपर कहा है वैसा जाने तो अन्तर में अपने आत्मा का ही परमात्मास्वरूप से दर्शन होता है। संसार में, गृहस्थपने में भी ऐसा आत्मदर्शन हो सकता है, इसका नाम अभेद-भक्ति है।

महाराजा भरत चक्रवर्ती हैं, ऋषभदेव भगवान के पुत्र हैं और इसी भव में मोक्ष जानेवाले हैं, छह खण्ड के राज में रहने पर भी कभी-कभी अन्तर में आत्मा का अनुभव कर लेते हैं। वे भरतजी अपनी रानियों को आत्मा के अनुभव का उपाय समझा रहे हैं।

आत्मा ज्ञानमय है; परन्तु कुछ करने का ज्ञान का स्वभाव नहीं है और राग-द्वेष करने का भी ज्ञान का स्वभाव नहीं है। ऐसे स्वभाव को पहिचाने तो अन्तर में आत्मा का दर्शन हो। देखो ! स्त्री को भी आत्मदर्शन होता है।

एक मूर्ख दरबार (राजा) था। उससे किसी ने पूछा कि तुम्हारी कितनी रानियाँ हैं ? उसने कहा कि कामदार को पूछो, मुझे खबर नहीं है; उसीप्रकार अज्ञानी जीव कहता है कि 'आत्मा का स्वरूप कैसा है ?'- उसकी उसे खबर नहीं है। शास्त्र को पूछो ! यहाँ कहते हैं कि आत्मा रागरहित ज्ञानमय है। ऐसा जानकर अन्तर में देखे तो आत्मा का अनुभव हो।

जिसप्रकार स्फटिक की शुद्ध प्रतिमा के ऊपर धूल होने पर भी वह दिखती है; उसीप्रकार चैतन्यमूर्ति आत्मा स्फटिक जैसा निर्मल है, ऊपर कर्म की धूल होने पर भी वह दिखाई देता है। आत्मा जाननहार स्वभावरूपी चैतन्य की प्रतिमा है और कर्म तथा शरीर की धूल से जुदा रहता है - ऐसा जानकर जो अनुभव करता है तो उसे स्फटिक प्रतिमा की तरह शुद्ध आत्मा का अनुभव होता है। आत्मा बाहर की क्रिया तो नहीं कर सकता है; पर राग-द्वेष करने का भी उसका स्वभाव नहीं है। पुरुषाकार ज्ञानमूर्ति आत्मा है, उसे पहिचाने तो आत्मा की अभेदभक्ति होती है। **(क्रमश:)**

आचार्य कुन्दकुन्द ज्ञान पहेली क्र. 4

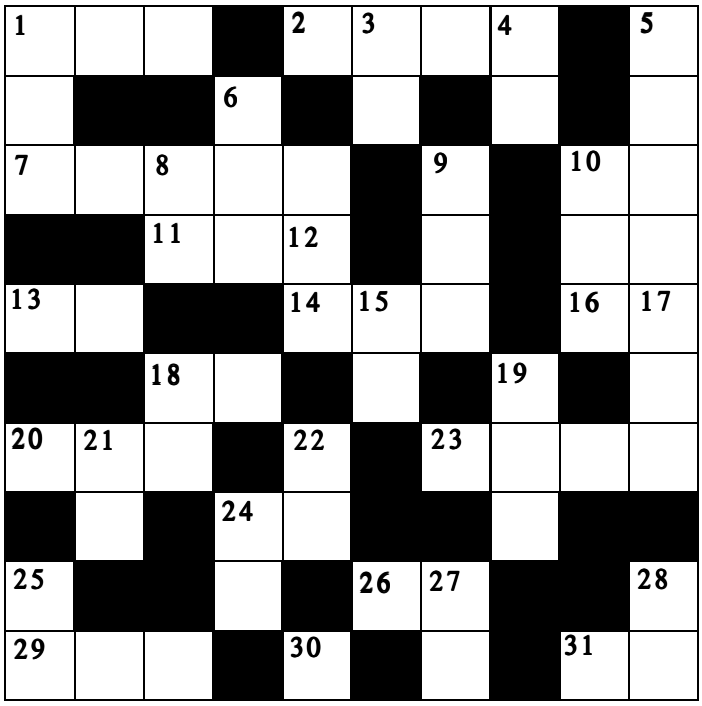

ऊपर से नीचे –

1. एक तत्त्व (3) **2.** द्रव्य के भेद (1) **3.** शरीर का एक अवयव (2) **4.** एक वर्ण (2) **5.** एक अज्ञान (3) **6.** कुछ काल के लिये व्रत (3) **8.** जीवों का एक भेद (2) **9.** विपरीत श्रद्धा (3) **10.** एक इन्द्रिय (3) **12.** आजीवन व्रत ग्रहण करना (2) **15.** मूलगुण पालन हेतु एक का त्याग (2) **17.** कर्मक्षयादि के लिये कौनसे परिणाम होते हैं ? (3) **18.** आठ भेद जिसके हैं वह (2) **19.** एक दोष (3) **21.** एक द्रव्य (2) **22.** एक आवश्यक (2) **24.** एक कषाय (2) **25.** नौ नोकषाय में से तीन की जोड़ी (2) **27.** एक आवश्यक (2) **28.** अष्ट द्रव्यों में से एक द्रव्य (2) **30.** दिव्यध्वनि (1)

बाएँ से दायें –

1. एक आवश्यक (3) **2.** एक ग्रन्थ का नाम (4) **7.** सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र (4) **10.** पच्चीस में से एक कषाय (2) **11.** काल का पर्यायवाची शब्द (3) **13.** सम्यग्ज्ञान के भेद (2) **14.** एकप्रकार की बुद्धि (3) **16.** एक इन्द्रिय, शरीर का अवयव (2) **18.** एक इन्द्रिय, शरीर का अवयव (2) **20.** एक द्रव्य (3) **23.** एक भावना (4) **24.** एक कषाय (2) **26.** तत्त्व के भेद (2) **29.** एक उपयोग (3) **30.** पंच परमेष्ठी का प्रतीक (1) **31.** अष्ट द्रव्यों में से एक (2)

निर्देश : 1. सभी उत्तर सादे पोस्टकार्ड अथवा कागज पर ही भेजिये, कृपया जैनपथप्रदर्शक को काटकर नहीं भेजें। 2. पहेली का हल भेजने की अन्तिम तिथि 10 मार्च 2002 है। 3. प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमश: 101रुपये, 75 रुपये, 51 रुपये के हैं एवं 25-25 रुपये के 3 सांत्वना पुरस्कार भी हैं।

पता – कुन्दकुन्द ज्ञान पहेली, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) **– प्रस्तुति : संतोष सावजी, अम्बड़**

फैडरेशन के वार्षिक पुरस्कार

कुराबड़ (उदयपुर) शिविर के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के 25 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान फैडरेशन की सक्रिय शाखाओं को वर्षभर चलाये गये विशिष्ट कार्यों के लिये पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार निम्नानुसार हैं –

विशिष्ट कार्य हेतु विशिष्ट शाखा पुरस्कार –

1. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा चन्द्रप्रभ चैत्यालय उदयपुर 2. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा जबलपुर 3. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा उस्मानपुर-दिल्ली 4. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा गुना 5. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा कुराबड़ 6. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर

शत-प्रतिशत मासिक प्रगति विवरण प्रेषित करनेवाली शाखा पुरस्कार –

1 अ. भा. जैन युवा फैडरेशन महिला शाखा हिरणमगरी से. नं.11 उदयपुर (राज.) 2. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा लूणदा (राज.) 3. अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा डडूका (राज.) 4. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा महिला गुना (म.प्र.)

वर्ष की सर्वश्रेष्ठ शाखा पुरस्कार –

1. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा मेरठ
2. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा बोरीवली-मुम्बई

वर्ष के श्रेष्ठ सदस्य पुरस्कार –

1. श्री अजय जैन अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा मेरठ
2. श्री नितिन जैन अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा नांगलराय-दिल्ली
3. श्री अनुराग जैन अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा गुना

वर्ष के श्रेष्ठ प्रान्तीय पदाधिकारी पुरस्कार –

* राकेशजी जैन शास्त्री दिल्ली प्रदेश प्रान्तीय पदाधिकारी

विशिष्ट सेवाओं के लिये अन्य व्यक्तिगत पुरस्कार –

1. श्री मुकेश जैन शाखा मेरठ 2. श्री संजीव जैन उस्मानपुर शाखा दिल्ली 3. श्री संजय जैन बहादुरगढ़ शाखा दिल्ली 4. श्री वकीलजी जैन नांगलोई शाखा दिल्ली 5. श्री अशोकजी जैन शाखा चाकसू (राज.) 6. श्री प्रवेश भारिल्ल करेली 7. श्री नवीन जैन फिरोजाबाद 8. श्री विक्रान्त शाह सोलापुर 9. श्री पवनजी जैन अलीगढ़ 10. श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर 11. ब्र. यशपाल जैन

श्री प्रमोद जैन को शाखा को सक्रिय करने हेतु

राष्ट्रीय अधिवेशन में सर्वाधिक शाखा सदस्य सहभागिता पुरस्कार –

1. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा लूणदा (राज.)
2. अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा गुना (म.प्र.)

राष्ट्रीय अन्ताक्षरी प्रतियोगिता –

प्रथम बापूनगर शाखा जयपुर एवं **द्वितीय** महिला शाखा हिरणमगरी सै.11 उदयपुर।

राष्ट्रीय भक्तिसंध्या प्रतियोगिता –

प्रथम पुरस्कार शाखा कुराबड़ एवं **द्वितीय** पुरस्कार शाखा लूणदा।

राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता – वर्तमान सन्दर्भों में महावीर के उपदेशों की प्रासंगिकता **प्रथम** बापूनगर शाखा जयपुर महानगर एवं **द्वितीय** फैडरेशन महिला शाखा मेरठ।

नया पता

श्री भगतराम जैन, महासचिव अ. भा. दिगम्बर जैन परिषद्
3750, गली मामन जमादार, पहाड़ी धीरज
दिल्ली-110006

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 40

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

पंचेन्द्रियों के विषयों का सेवन करनेवाला गृहस्थ और पंचेन्द्रियों के विषयों का त्यागी नग्न दिगम्बर साधु उक्त मान्यता में दोनों एक से ही हैं।

इसकी अपेक्षा यह है कि दोनों ही आत्मा को नहीं जानते; अतः एक से हैं। दोनों ने जो भी आचरण पाला है, वह आत्मा के लक्ष्य से नहीं पाला है; मुनि ने 'मैं मुनि हूँ' इस लक्ष्य से पाला है और गृहस्थ ने 'मैं गृहस्थ हूँ' इस लक्ष्य से पाला है।

मुनि का ध्यान मात्र 'मैं मुनि–मैं मुनि' इस पर ही केन्द्रित रहा, गृहस्थ का ध्यान 'मैं गृहस्थ–मैं गृहस्थ' इस पर ही केन्द्रित रहा; वे दोनों ही आत्मा से च्युत हुए।

पण्डित बनारसीदासजी ने लिखा है – न मैं गृहस्थ हूँ, न मैं यति हूँ; मैं तो भगवान आत्मा हूँ। पुण्य और पाप में भेद जाननेवाले दोनों को ही भगवान आत्मा ऊर्ध्व नहीं रहा।

मैं तो जानने–देखनेवाला हूँ। गृहस्थ अवस्था में भी जो होता है, उसे मैं जानने–देखनेवाला हूँ और मुनि अवस्था में जो होता है, उसे भी मैं जानने–देखनेवाला हूँ। ज्ञानी गृहस्थ और ज्ञानी मुनि – दोनों ऐसा ही मानते हैं।

अज्ञानी के और ज्ञानी के गृहस्थावस्था में और मुनि अवस्था में एक जैसा ही आचरण पलता है। ज्ञानी गृहस्थ के भी शादी होती है, धंधा–पानी आदि सांसारिक प्रवृत्तियाँ होती हैं; शास्त्रों में भरत चक्रवर्ती इत्यादि के अनेक उदाहरण हैं।

फिर भी ज्ञानी गृहस्थ यह जानता है कि यह मेरी, गृहस्थ की कमजोरी की भूमिका है और इस भूमिका में ऐसे भाव आये बिना रहते नहीं हैं। ऐसे भाव आते ही हैं। ये भाव आये तो भी ज्ञानी को कोई बाधा नहीं है; क्योंकि वह तो यह जानता है कि मैं इस क्रिया का कर्त्ता नहीं हूँ।

पुण्य–पाप क्रिया और पुण्य–पाप भाव में अंतर है। मंदिर में भगवान की पूजा कर रहे हैं तो एक थाली का द्रव्य दूसरे थाली में जाता है। मुख से पूजन के छन्द गाकर बोले जाते हैं। यह सब जड़ की क्रिया है। कर्त्ताकर्माधिकार में कहा गया है कि इसका कर्त्ता आत्मा नहीं है; वह अपनी योग्यता के कारण जैसा जिस काल में होना था, वैसा उस काल में हुआ है।

यह थाली में से चावल उठाता है और चाहता है कि पूरे चावल दूसरे थाली में डालूँ; लेकिन कुछ चावल उसी थाली में गिर जाते हैं और कुछ उछलकर बाहर चले जाते हैं। जिसकी जहाँ योग्यता थी, वह वहाँ जाता है। इसप्रकार यह पूर्णतः जड़ की क्रिया है, यह ज्ञानी जानता है। ज्ञानी यह जानता है कि पूजन के विशुद्धभाव भी विकार की क्रिया है। चाहे शुभ हो या अशुभ हो – दोनों विकारभाव की ही क्रियायें हैं। इसप्रकार पुण्य–पाप क्रिया और पुण्य–पाप भाव – दोनों पर भाव ही हैं।

जीवाजीवाधिकार की दृष्टि से यदि इस पर विचार किया जाय तो पुण्य–पाप की जो क्रिया है, वह वर्णादि में और पुण्य–पाप के जो भाव हैं, वे रागादिभावों में आते हैं और भगवान आत्मा – इन दोनों से भिन्न है।

पूजन करते समय भी ज्ञानी तो जानता ही है कि इस थाली का द्रव्य उस थाली में जा रहा है और मेरे भक्ति के परिणाम हो रहे हैं। कभी–कभी पूजन के मध्य ज्ञानी आत्मा में भी चला जाता है, तब इन्हें जानता भी नहीं है। ऐसा कभी–कभी होता है।

आज पूजन करते समय जो कायोत्सर्ग होता है, वह मात्र निरीह क्रिया हो कर रह गई है। आज इस कायोत्सर्ग के समय 9 बार णमोकार जपने की प्रथा चल निकली है। 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ना कायोत्सर्ग का वास्तविक स्वरूप नहीं है। भगवान की पूजन करते समय इस जीव के ज्ञान का ज्ञेय भगवान बन रहे थे। जड़ की क्रिया इस जीव के ज्ञान का ज्ञेय बन रही थी, शुभभाव इसके ज्ञान का ज्ञेय बन रहे थे। इन सब ज्ञेयों से हटकर जब त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा इस जीव के ज्ञान का ज्ञेय बनता है, तब ही वास्तविक कायोत्सर्ग होता है।

समयसार में तो यहाँ तक लिखा है कि बंध और मोक्ष भी जाने जाते हैं, होते नहीं हैं। आशय यह है कि भगवान आत्मा न बंध का कर्त्ता है और न ही मोक्ष का।

ज्ञानावरणादि कर्मों का आत्मा के प्रदेशों के साथ एकमेक होना द्रव्यबंध है। यह जड़ की क्रिया है। इस जड़ की क्रिया का छूटना द्रव्यमोक्ष है; इसलिए यह भी जड़ की क्रिया है।

भावबंध और भावमोक्ष का भी कर्त्ता आत्मा नहीं है। राग–द्वेष –मोहादि का होना भावबंध है और राग–द्वेष–मोहादि का नहीं होना भावमोक्ष है। आत्मा न मोह–राग–द्वेषादिक का कर्त्ता है और न इन्हें रोकने का कर्त्ता है। इसप्रकार यह आत्मा द्रव्यबंध, द्रव्यमोक्ष, भावबंध और भावमोक्ष – इन चारों का भी कर्त्ता नहीं है।

जब इस भगवान आत्मा को मोक्ष हुआ, तब भी इस आत्मा ने क्या किया ? बस ! जान लिया कि मोक्ष हुआ। जब बंध नहीं हुआ, तब मोक्ष भी स्वयमेव जानने में आया।

इसप्रकार बंध और मोक्ष का कर्त्ता भी आत्मा नहीं है; वह उनका भी मात्र ज्ञाता–दृष्टा ही है।

मोक्ष को जाना यह कहो, जानने में आया यह क्यों कहते हो?

इस आत्मा को उसे जानने की रुचि नहीं है। इसलिए मोक्ष जानने में आता है, ज्ञानी उसे जानने नहीं जाता।

इस भगवान आत्मा ने बंध नहीं किया, मोक्ष नहीं किया; तो जब बंध हुआ, तब बंध हुआ – ऐसा इसने जाना एवं जब मोक्ष हुआ, तब मोक्ष हुआ – ऐसा जाना। इस सीमा के बाहर वह जाता ही नहीं है। पुण्य–पाप दोनों कर्म के ही पुत्र हैं।

एक व्यक्ति राजा के द्वार पर आया और द्वारपाल से कहा – 'मुझे दीवानजी से मिलना है।' द्वारपाल ने पूछा – 'तुम कौन हो ?' इस पर उस व्यक्ति ने कहा – 'मैं दीवानजी का साढूभाई हूँ।' उस व्यक्ति को दरवाजे पर खड़ा करके द्वारपाल ने दीवानजी को सूचना दी कि एक व्यक्ति आपसे मिलना चाहता है और वह स्वयं को आपका साढूभाई बता रहा है।

दीवानजी सोच में पड़ गए कि मेरी पत्नी तो कहती थी कि वह

अपने माँ–बाप की इकलौती बेटी है। उसकी तो कोई दूसरी बहन है ही नहीं; लेकिन अब ये साढूभाई कहाँ से आ गये ?

फिर भी दीवानजी ने कहा – हाँ, बुलाओ–बुलाओ !

जब वह व्यक्ति दरबार में आया तो उसकी स्थिति देखकर सभी दरबारियों को हँसी आ गई। कुछ देकर दीवानजी ने उसे वापस किया।

राजा ने दीवानजी से पूछा, 'क्या ये हैं आपके साढूभाई।' दीवानजी ने कहा – 'हाँ ये ही हैं। कर्मरूपी राजा की दो बेटियाँ हैं – एक पुण्य एक पाप। पुण्यकर्म की शादी मुझसे हुई और पापकर्म की शादी इससे हुई है। इसप्रकार ये मेरे साढूभाई ही हैं।

कर्म चाहे पुण्य हो, चाहे पाप – दोनों कर्म ही हैं; वे कर्मत्व का उल्लंघन नहीं करते हैं।

धर्म और कर्म दोनों परस्पर विरुद्ध हैं। हमें कर्म के नाश के लिए धर्म करना है; लेकिन हम उन कर्मों के नाश के लिए पुण्य नामक कर्म ही करते हैं। कर्म का नाश करना है तो कर्म का अभाव करना चाहिए, इसके विपरीत हम कर्म का नाश करने के लिए कर्म ही करते हैं।

धर्म और कर्म – ये दोनों परस्पर विरुद्ध पार्टियाँ हैं, जिनमें आपस में लड़ाई चलती रहती है। इस लड़ाई में कर्म नामक पार्टी ने पुण्य नाम के कर्म को धर्म का वेष पहना दिया एवं खुद कर्म का वेष पहन लिया।

उन दोनों कर्म में ही एक कर्म बन गया और एक धर्म बन गया। इससे हानि यह हो गई कि सच्चा धर्म ही गायब हो गया। कर्म करना हो तो भी कर्म करो और धर्म करना हो तो भी कर्म करो।

पूजन में हमने 'अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति' का उच्चारण किया; आठ कर्म के नाश के लिए उपाय किया। पर पूजन करना भी तो एक कर्म ही था, उससे कर्म का नाश नहीं हुआ; अपितु इससे विपरीत कर्मबंध हुआ। यह जीव उपाय तो कर्मनाश के लिए कर रहा है और हो रहा है कर्मबंध।

ऐसे ही एक ही कर्म द्विपात्रीभूय – दो पात्रों के दो वेष बनाकर सामने उपस्थित हुआ है।

जैसे किसी के ऊपर गलत काम करने का कोई आरोप लग जाता है, तब लोग कहते हैं कि कुछ न कुछ करके इस आरोप को दबा दो। यदि वह आरोप न्यायालय में दायर हो जाता है, तब चतुर लोग कहते हैं कि अब यह केस चलने दो; इसे कोर्ट में ही निपटाकर खत्म कर दें। तब वह स्वयं सामने नकली पार्टी खड़ी करके केस चलवाते हैं। उस पार्टी के पास अच्छे वकील, अच्छी पैरवी नहीं होने के कारण उस पक्ष को केस हारना ही है। फिर हारने के बाद वह उस केस को वहीं पर खत्म कर देता है। जब छह माह तक कोई उस अपराध के विरुद्ध अपील नहीं करता है तो फिर उसे उस अपराध के लिए पुनः कभी दण्डित नहीं किया जा सकता है। इसप्रकार एक ही व्यक्ति दो झूठे पक्षों को उठाकर इस मामले को निपटा देता है। ऐसे कई उदाहरण हैं।

सरकार का यह नियम है कि सरकार का कोई काम करना हो तो उसके लिए वह तीन कोटेशन माँगती है; जब एक ही व्यक्ति से काम कराना हो तो एक व्यक्ति से ही तीन कोटेशन ले लेते हैं। इसप्रकार एक ही व्यक्ति अपनी ओर से तीन कोटेशन दे देता है।

इसीप्रकार कर्म कम चतुर नहीं हैं। कर्म के इस पक्ष ने सोचा कि 'धर्म मत करो' ऐसा कहेंगे तो धर्म की छुट्टी होनेवाली नहीं है, उन्होंने कर्म के ही एक हिस्से को धर्म का वेष पहनाकर, धर्म का पाठ पढ़ाकर धर्म नाम से प्रचारित कर दिया। इससे सारे संसारी जीव धर्म के नाम पर कर्म में ही लग गए। जो गृहस्थावस्था में रहे वे भी और जो आत्मज्ञानशून्य मुनि हुए वे भी धर्म के नाम पर कर्म में ही लग गए। धर्म के नाम पर उन्होंने घर छोड़ा था; फिर भी वे कर्म में ही लग गए।

इसलिए पाप से भी अधिक यदि कोई धर्म का लुटेरा है, धर्म का शत्रु है तो वह पुण्य ही है; क्योंकि इसने धर्म का वेष धारण करके, धर्म बनकर जगत को ठगा है।

धार्मिक अध्ययन के लिए शिक्षण–संस्थायें स्थापित करते हैं; समाज से पैसा धार्मिक शिक्षा के नाम पर लेते हैं और दी जाती है लौकिक शिक्षा। इसीप्रकार धर्म के नाम पर धर्मार्थ अस्पताल खोलते हैं और उसमें अभक्ष्य औषधियाँ दी जाती हैं। इसप्रकार धर्म का पैसा कर्म में ही चला जाता है।

धर्म के नाम पर पुण्यकार्य ही होते हैं; उनमें ही पैसा जाता है। वस्तुतः धर्म तो पैसे से होता ही नहीं, धर्म में तो पैसे के परिग्रह का त्याग होता है। धर्म तो आत्मा के कल्याण का नाम है।

वृद्धावस्था समीप आने पर यह जीव धंधा–पानी आदि सब सांसारिक कार्यों को छोड़कर 24 घंटे धर्म के लिए समर्पित करता है। यदि आत्मकल्याणरूप वास्तविक धर्म नहीं हुआ तो इसका समय पापकार्य में तो जायगा नहीं; क्योंकि उसने इससे तो निवृत्ति ले ली है, अब शेष रहा पुण्यकार्य ही धर्म की कटौती करेगा।

धर्म के नाम पर धर्म की कटौती पुण्य करता है – चाहे वह पुण्यभाव हो, चाहे पुण्यक्रिया। वही धर्म का सबसे बड़ा शत्रु है। वह है कर्मचंद और नाम रखा है धर्मचंद। सब जीव धर्म के नाम पर कर्म में उलझे हैं; इसी पीड़ा के कारण आचार्य कुन्दकुन्द जैसे आचार्य भगवन्त यह पुण्य–पाप एकत्व अधिकार लिखने के लिए बाध्य हुए।

आज परिस्थितियाँ ऐसी हो गयी हैं कि धर्म के नाम पर कर्म की चर्चा करते हैं तो प्रशंसा होती है, लोग तालियाँ पीटते हैं। यदि धर्म के नाम पर धर्म की चर्चा करो तो कोई साथ नहीं देता, बल्कि इसे व्यर्थ समझता है।

तब यह अज्ञानी जीव कहता है कि आपके हिसाब से तो हम कुछ भी न करें, न अस्पताल खोलें, न स्कूल खोलें, न पाठशाला खोलें।

इस पर आचार्य कहते हैं कि हमारा हिसाब इस जीव ने जाना ही कहाँ है; हमारे हिसाब से 'कुछ करो नहीं' – ऐसा नहीं है; अपितु इसने आजतक कुछ किया ही नहीं है; यह जीव न कुछ कर सकता है और न ही कुछ कर सकेगा।

यह जीव परद्रव्य की क्रिया में कुछ भी नहीं कर सकता है। अपनी आत्मा में उत्पन्न होनेवाले राग–द्वेष परिणामों में भी यह जीव कुछ नहीं कर सकता।

यह जीव कमजोर है; इसलिए परद्रव्य में कुछ नहीं कर सकता है – ऐसी बात नहीं है; अपितु अनंतवीर्य के धनी, अतुल्य बल के धनी तीर्थंकर भगवान भी पर में कुछ नहीं कर सकते हैं। (**(क्रमशः)**

भगवान महावीर के नाम पर नया मेडिकल कॉलेज

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सोमवार 17 दिसम्बर 2001 को प्रात: 11 बजे नई दिल्ली में सफदरजंग अस्पताल परिसर में जैनधर्म के 24 वें तीर्थंकर के नाम पर वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन किया। गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता स्वास्थ्यमंत्री डॉ.सी.पी. ठाकुर ने की। जैनसमाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

भारत सरकार ने सफदरजंग अस्पताल परिसर में प्रारंभ होनेवाले इस मेडिकल कॉलेज का नाम वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज रखा है। भारत सरकार ने इस कॉलेज के लिये 81.6 करोड़ रुपये का अनुदान दिया है। यह कॉलेज तथा अस्पताल राजधानी का विशिष्ट स्वास्थ्य केन्द्र होगा। वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज में शिक्षण का कार्य 1 जनवरी 2002 से प्रारंभ हो गया है। दिल्ली में यह पाँचवा मेडिकल कॉलेज 30 वर्ष बाद खोला गया है।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि महापुरुषों के नाम से कॉलेज स्थापित किया जाना एक बात है, किन्तु उनके नाम की गरिमा के अनुरूप इस संस्था का विकास करना दूसरी बात है।

गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने इस बात पर जोर दिया कि भगवान महावीर की शिक्षा के अनुसार जीवन-शैली शुद्ध होनी चाहिये; क्योंकि जीवन-शैली ठीक हो तो चिकित्सा की जरूरत ही नहीं पड़ती। उन्होंने इस मेडिकल संस्थान के साथ भगवान महावीर का नाम जोड़े जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

स्वास्थ्यमंत्री डॉ. सी.पी. ठाकुर ने कहा कि यह भगवान महावीर का 2600 वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष है। महोत्सव की आयोजना के लिये गठित भगवान महावीर 2600 वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव राष्ट्रीय समिति के प्रधानमंत्रीजी स्वयं अध्यक्ष हैं; अत: प्रधानमंत्रीजी की प्रेरणा से ही इस संस्थान का नाम वर्धमान महावीर मेडिकल रखा गया है। स्वास्थ्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि इस कॉलेज में 50 प्रतिशत प्रवेश राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रहनेवाले छात्रों को दिया जायेगा और शेष 50 प्रतिशत प्रवेश देश के विभिन्न भागों के छात्रों को दिया जायेगा।

भगवान महावीर 2600 वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव महासमिति ने सभी राज्य समितियों से अनुरोध किया है कि सामाजिक सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की दृष्टि से बननेवाले संस्थानों का नामकरण भगवान महावीर के नाम से जुड़ सके तो हमें प्रयास करना चाहिये। यह स्वाभाविक है कि जिस संस्थान के साथ हमारे आराध्य भगवान महावीर का नाम जुड़े उसके विकास के लिये जैन समाज भी तन-मन-धन से समर्पित होवे। **– एल.एल. आच्छा**

नवलब्धि विधान सानन्द सम्पन्न

बेंगलौर– यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 6 दिसम्बर को नवलब्धि विधान सानन्द संपन्न हुआ। विधान के आयोजनकर्त्ता श्री प्रवीणकुमारजी जैन थे। सभी कार्यक्रम स्थानीय विद्वान श्री किशोरजी शास्त्री ने संपन्न कराये । लगभग 200 लोगों ने उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया।

– भबूतमल भंडारी

आध्यात्मिक गीत –

यह द्वादशांग का चिन्तन है

– विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्रसागर प्रचंडिया

जीवन में जिनधर्म मुखर हो,
उपजे नित्यस्वभाव सुधर हो,
नहीं सतायें किसी जीव को, यह देव, शास्त्र, गुरु-वंदन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।1।।
संयम से समता जगती है,
समता से ममता नसती है,
और सफल हो सिद्ध-साधना, होता पूरन तभी नमन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।2।।
जो है नहीं हमारा छूटे,
त्याग-धर्म के अंकुर फूटे,
नर-भव तभी सार्थक होता, तप से मँजता अन्तर्मन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।3।।
निर्मल मन ही धर्म हमारा,
अंतकाल में यही सहारा,
अपना दीपक स्वयं जले तब, आलोकित होता तन-मन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।4।।
दर्शन-मोह मिटे जीवन से,
मिले मुक्ति भव-भव भटकन से,
खुलते द्वार मोक्षधाम के, होय आखिरी जनम-मरन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।5।।

श्री रविचन्द उमेदचन्द सेठ नहीं रहे

बांकानेर निवासी हाल मुकाम अहमदाबाद एवं नवरंगपुरा मुमुक्षु मण्डल के मानद सदस्य श्रीमान रविचन्द उमेदचन्द शेठ का 19 दिसम्बर 2001 को देहावसान हो गया है। आप गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान से जीवनभर जुड़े रहे। आपने पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का सोनगढ़ एवं अहमदाबाद में अनेक बार प्रत्यक्ष धर्मलाभ भी प्राप्त किया था।

आप टोडरमल स्मारक जयपुर के विद्यार्थियों से अत्यन्त प्रभावित थे; अत: आपकी इच्छानुसार आपके परिजनों ने श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में एक विद्यार्थी के खर्चस्वरूप 15 हजार रुपये की राशि प्रदान की है; एतदर्थ धन्यवाद। दिवंगत आत्मा शीघ्र ही आत्मकल्याण कर मुक्ति को प्राप्त करे – यही मंगल भावना है।

पुस्तक समीक्षा –

स्वाध्याय पद संग्रह

यह पुस्तक श्री शान्तिलालजी वनमाली दास शेठ की पावन स्मृति में प्रकाशित की गई है, इसमें उन विशिष्ट रचनाओं का संगलन किया गया है, जिनका प्रत्येक जैन श्रावक स्वाध्याय के रूप में नियमित पाठ करता है। कृति के आरंभ में सुभाषित अर्थ सहित, भक्तामर स्तोत्र, स्तुतियाँ, देव-शास्त्र-गुरु आदि पाँच पूजायें, आलोचना पाठ खण्ड, भक्ति पाठ खण्ड (हिन्दी एवं गुजराती) हैं। अन्त में स्वाध्याय पाठ खण्ड है। यह कृति श्रावकों के लिये अवश्य ही सहायक होगी।

720 तीर्थंकर विधान एवं महामस्तकाभिषेक सम्पन्न

देवलाली (नासिक) : यहाँ श्री 1008 दिग. जैन शान्तिनाथ जिनालय में दिनांक 26 से 31 दिसम्बर तक स्व. श्री रामजीभाई माणकचन्दजी दोशी (बापूजी) की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री सुमनभाई दोशी परिवार द्वारा श्री शान्तिनाथ भगवान तथा अष्ट बलभद्र भगवान की धातु की प्रतिमाओं का महामस्तकाभिषेक एवं श्री 720 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' भोपाल एवं पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर के भी मार्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण आयोजन में कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट, मुम्बई के ट्रस्टी श्री बसन्तभाई एम. दोशी, ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर, श्री पूनमचन्दजी लुहाड़िया, श्री शान्तिभाईजी जबेरी, पण्डित हरकचन्दजी बिलाला के साथ-साथ दिगम्बर जैन महासमिति के कार्याध्यक्ष श्री अशोककुमारजी बड़जात्या एवं कार्यकर्ता श्री मांगीलालजी पहाड़िया, श्री डॉ. चन्दूभाई, श्री ईश्वरभाई, पं. राकेशजी शास्त्री, पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

विधि-विधान के सभी कार्यक्रम पण्डित यशवंतजी शास्त्री देवलाली, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा एवं पण्डित अनिलजी धवल 'भोपाल' ने सम्पन्न कराये। सभी कार्यक्रम बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

डॉ. भारिल्ल मुम्बई विश्वविद्यालय में

3 जनवरी 2002 को मुम्बई विद्यापीठ के जैनदर्शन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय विद्याभवन (चोपाटी) के समीपस्थ भवन्स कॉलेज के सभागृह में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का 'भगवान आत्मा' विषय पर एक अत्यन्त रोचक व्याख्यान हुआ, जिसे उपस्थित श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल द्वारा भगवान महावीरस्वामी के बारे में लिखी गई 4 पुस्तकों के सैट भी सभी छात्रों को वितरित किये गये।

प्राकृत भाषा एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जबलपुर : श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर हनुमानताल में श्री पार्श्वनाथ पूजा मण्डल द्वारा दिनांक 23 दिसम्बर से 2 जनवरी 2002 तक प्राकृत भाषा एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर में प्रात: 8.30 बजे से 10.15 बजे तक पूजन होती थी, तत्पश्चात् अनेकान्त ज्ञानमंदिर बीना से पधारे ब्र. संदीपजी 'सरल' द्वारा पूजन के बारे में समझाया जाता था। रात्रि में आचार्यों के ग्रन्थों से संकलित 51 गाथाओं के माध्यम से प्राकृतभाषा का प्रारंभिक ज्ञान कराया गया।

सभी कार्यक्रमों में विधायक श्री नरेशजी सर्राफ, स्थानीय पार्षद, श्री पदमचन्दजी जैन, पण्डित विरागजी शास्त्री एवं श्री नरेन्द्रजी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। **- अजित नायक**

चारित्र ही धर्म है

चारित्तं खलु धम्मो धम्मो जो सो समो त्ति णिद्दिट्ठो।
मोहक्खोह विहीणो परिणामो अप्पणो हु समो ।।7।। प्रवचनसार

चारित्र वास्तव में धर्म है, जो धर्म है वह साम्य है - ऐसा कहा है और साम्य मोह-क्षोभ रहित आत्मा का परिणाम है। **- भबूतमल भण्डारी**

पर्यटन (तीर्थदर्शन)

उत्तरप्रदेश प्रान्त

कंपिलाजी (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : शिकोहाबाद से फर्रूखाबाद जिले के कायमगंज कस्बे से कंपिलाजी 4 किलोमीटर दूर सड़क मार्ग पर स्थित है।

पौराणिक युग के नगर कांपिल्य को ही वर्तमान में कंपिलाजी कहते हैं। यहाँ भगवान विमलनाथजी के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणक सम्पन्न हुये थे। महाभारत काल में यह राजा द्रुपद की राजधानी थी, जहाँ द्रोपदी का स्वयंवर हुआ था। यहाँ हरिषेण चक्रवर्ती ने जैनरथ निकलवाकर धर्मप्रभावना की थी। कहते हैं कि भगवान महावीर का समवशरण यहाँ भी आया था।

वर्तमान में यहाँ कोई जैन परिवार न होते हुये भी 492 ई. में निर्मित एक अति प्राचीन मंदिर में भगवान विमलनाथजी की मूलनायक अतिशयसम्पन्न प्रतिमा विराजमान है। पूर्व में भगवान विमलनाथजी के चरणचिन्ह एक कोठरी में थे, जिन्हें अब बाहर स्थापित कर दिया गया है।

आवास : मंदिर के बाहर व बस्ती के दूसरे सिरे पर धर्मशालायें हैं।

कानपुर

मार्ग-स्थिति : कायमगंज से रेल द्वारा कानपुर जाना चाहिये।

यह स्थान उद्योग और व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र है। जैनों की अच्छी आबादी है और अनेक जैन मंदिर हैं, उनमें कांच का मंदिर विशेष दर्शनीय है। पंचायती बड़े मंदिर में विपुल शास्त्र भण्डार है।

आवास : लाठी मोहल्ले में जैन धर्मशाला है।

लखनऊ

मार्ग-स्थिति : उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ देश के सभी रेल, सड़क एवं वायुमार्ग से जुड़ा है।

उत्तरप्रदेश की राजनैतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र लखनऊ में जैनसमाज जनसंख्या की दृष्टि से समृद्ध है। यहाँ 6 दिगम्बर जिनालय हैं, इनमें चौक, डालीगंज, याहियागंज के मंदिर विशेष दर्शनीय हैं। राजकीय संग्रहालय में जैन मूर्तियों का विशाल संग्रह है।

लखनऊ के अन्य दर्शनीय स्थलों में छोटा और बड़ा इमामबाड़ा, चिड़ियाघर आदि हैं।

आवास : चार बाग स्टेशन के निकट मुन्नेलाल कागजी की धर्मशाला है तथा उसमें जिनालय भी है।

त्रिलोकपुर (अतिशय क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : बाराबंकी जिले में बाराबंकी से 25 कि.मी. दूर है। निकटस्थ रेलवे स्टेशन बिदौरा 5 कि.मी. है।

यहाँ दो जिनमंदिर हैं, इनमें नेमिनाथ जिनालय में भगवान नेमिनाथ की श्याम पाषाण की प्रतिमा में अद्भुत आकर्षण है।

किंवदन्ती है कि इस प्रतिमा के मुख पर प्रात: बालक का-सा भोलापन, मध्यान्ह में यौवन का तेज एवं सायं में प्रौढ़ की-सी गंभीरता झलकती है। प्रतिमा किसी अजैन बंधु को तालाब में मिली थी, जिसे जैन श्रावकों ने मंदिर निर्माण कर प्रतिष्ठित कर दिया। यहाँ दूसरा मंदिर भगवान पार्श्वनाथ का है।

आवास : धर्मशाला है।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासमिति के संस्थापक सदस्य वयोवृद्ध समाजसेवी श्री बाबू महावीरप्रसादजी जैन एडवोकेट का 102 वर्ष की आयु में गत 3 जनवरी 2002 को देहावसान हो गया है। बाबूजी धर्मनिष्ठ-कर्मनिष्ठ एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। आप जीवनभर गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान से प्रभावित रहे एवं स्वाध्याय में निरंतर संलग्न रहे। आप आजीवन दिगम्बर जैन समाज की अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े रहे।

2. जामनगर निवासी धर्मपरायणा सेवाभावी उदारमना श्रीमती हंसाबेन का दिनांक 8 जनवरी 2002 को देहविलय हो गया है। आप निरंतर गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान से जुड़ी रहीं।

3. मौ (भिण्ड) निवासी श्री कमलकुमार जैन पुत्र श्री वृंदामल कुर्तिया (मामा) का दिनांक 2 जनवरी 2002 को देहावसान हो गया है। आपका सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त धार्मिक था एवं नित्य स्वाध्याय आपके जीवन का अभिन्न अंग था।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल कामना है।

केरल में भी धर्मप्रभावना

एरनाकुलम : यहाँ 24 से 28 दिसम्बर तक प्रात: पूजन एवं मोक्षमार्गप्रकाशक के तीसरे अधिकार पर विद्वानों प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित मोहित शास्त्री के छहढाला की तीसरी ढाल पर सारगर्भित प्रवचन हुये। सायंकाल बालबोध पाठमाला भाग-2 की कक्षा पण्डित राजकुमारजी दोशी ने ली। इसके अलावा वीतराग-विज्ञान भाग-1 की कक्षा भी चलाई गई।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रत्येक रविवार को एक धार्मिक गोष्ठी आयोजित की जाती है, जिसमें अभीतक हिंसा एवं अहिंसा, पूजा : एक अध्ययन, दशलक्षण धर्म और महत्त्व, सप्त व्यसन, छह द्रव्य, रत्नत्रय, तीन मूढ़ता, चार गति, सम्यक्त्व, चार दान, सात तत्त्व, पंच परमेष्ठी आदि अनेक विषयों पर गोष्ठियाँ आयोजित की जा चुकी हैं। सभी कार्यक्रमों में सर्वश्री महेन्द्रकुमारजी जैन, नरेशकुमारजी दोशी एवं सुनीलकुमारजी जैन का विशेषरूप से योगदान रहता है।

भगवान महावीर पर जारी सिक्का

ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा सन् 1616 में भगवान महावीरस्वामी पर एक सिक्का जारी किया गया था। तांबे के इस सिक्के का वजन 12 ग्राम तथा व्यास 32 मि.मी. है।

सिक्के के दोनों तरफ के चित्र

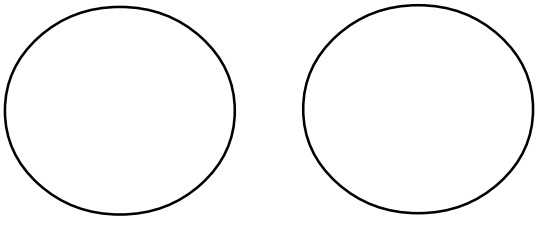

इस सिक्के के एक ओर भगवान महावीर का चित्र और उनका चिन्ह शेर बना है तथा हिन्दी में भगवान महावीर लिखा है। दूसरी ओर अंग्रेजी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जारी होने का सन् 1616 तथा कीमत आधा आना अंकित है। साथ ही उर्दू में भी दो पैसे लिखा हुआ है। **- सुधीर जैन, सतना**

आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

कौण्डकौन्ड्रा (आन्ध्रप्रदेश) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी की जन्म एवं साधनास्थली पर श्री दिगम्बर जैन ट्रस्ट के संयोजकत्व में दिनांक 23 दिसम्बर 2001 से 30 दिसम्बर 2001 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर में कर्नाटक के हुबली, हासन, बैंगलोर, मण्ड्या, बेलगाम, बेल्लूर, दवणगिरी, चामराजपुर आदि तथा महाराष्ट्र के सांगली, कोल्हापुर, सोलापुर, बीजापुर आदि स्थानों से करीब 300 शिविरार्थी आये थे।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 7 बजे से 11 बजे तक, दोपहर में 2 बजे से 5 बजे तक तथा सायं 7 से 10 बजे तक तीन-तीन घण्टे तथा सब मिलाकर 9 घण्टे प्रवचन होते थे। श्री एम. बी. पाटील के पंचास्तिकाय, धर्मदीपक, आत्मवैभव तथा धवलजी के सामायिक पाठ ग्रन्थ पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **- किशोर शास्त्री**

पधारिये ! स्वाध्याय: परमं तप: अवश्य पधारिये !!!

वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय भवन का उद्घाटन

अध्यात्मजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के जन्मग्राम बरौदास्वामी ललितपुर (उ.प्र.) में नवनिर्मित वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय भवन का उद्घाटन समारोह 19 फरवरी 2002 को प्रात: 10 बजे आयोजित किया गया है। ज्ञातव्य है कि इसका शिलान्यास 15 जनवरी 2001 को किया गया था, जो अब बनकर तैयार हो गया है।

आप सभी साधर्मी बन्धु कार्यक्रम में उपस्थित होकर धर्मलाभ लेवें।

निवेदक

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई

सकल दिगम्बर जैन समाज, बरौदास्वामी

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

गजपंथा	- 11 से 13 फरवरी 2002	पंचकल्याणक
विदिशा	- 14 से 17 फरवरी 2002	पंचकल्याणक
बरौदास्वामी	- 19 फरवरी प्रात: 10 बजे उद्घाटन स्वाध्याय भवन	
खनियांधाना	- 20 से 25 फरवरी 2002	पंचकल्याणक
दिल्ली (दिलशाद बाग)	- 26 फरवरी से 3 मार्च 2002	पंचकल्याणक

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **फरवरी (प्रथम) 2002**
आई. आर. / R. J. 3002/02

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर